International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

लिंगानुपात : अलवर–भरतपुर जिलों का तुलनात्मक अध्ययन (जनगणना अवधि 1901 से 2011 के संदर्भ में)

डॉ. वेद प्रकाश यादव
सह आचार्य (भूगोल)
बी.एस.आर. राजकीय कला
महाविद्यालय, अलवर (राज.)

शोधसार

अलवर एवं भरतपुर दोनों जिलों के 1901 से 2011 की जनसंख्या के आँकड़ों का विश्लेषण करने से पता चलता है कि दोनों जिलों में राजस्थान राज्य की तुलना में लिंगानुपात कम है। भरतपुर में लिंगानुपात की दशा अलवर से भी खराब है। 1901 में अलवर में लिंगानुपात 922 था जबकि 2011 में 895 ही रह गया। इसी प्रकार भरतपुर में अध्ययन अवधि में लिंगानुपात में 832 स 880 के मध्य विचलन होता रहा है। भरतपुर जिले में अलवर जिले से लिंगानुपात 1901–2011 की अवधि में लगातार कम रहा है। वर्ष 1911 में यह अन्तर 73 अंकों के साथ उच्चतम तथा 2011 में 15 अंकों के साथ न्यूनतम रहा। दोनों जिलों का लिगानुपात 1901–2011 की अवधि में निरन्तर उतार–चढ़ाव वाला रहा है।

मुख्य शब्द : लिंगानुपात, जनसंख्या संघटन, जनसंख्या प्रवास, आन्तरिक प्रवास, कन्या भ्रूण हत्या, कन्या वध, प्रसूता।

समस्या कथन

समाज में संतुलन बनाए रखने के लिए महिला–पुरुष अनुपात लगभग बराबर होना चाहिए। असंतुलन की स्थिति में अनेक सामाजिक–मनोवैज्ञानिक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। इनके समाधान के लिए लिंगानुपात में कमी के कारणों का ढूंढना जरूरी है। अलवर, भरतपुर दोनों जिलों में लिंगानुपात राजस्थान राज्य के औसत से कम है। अतः इन जिलों में लिंगानुपात का अध्ययन सामाजिक हित में है। इसी कारण प्रस्तुत शोध विषय चुना गया है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

राजस्थान राज्य के उत्तरी–पूर्वी राजधानी क्षेत्र का हिस्सा है। भरतपुर जिला 26^0 22′ उत्तरी अक्षांश से 27^0 50′ उत्तरी अक्षांश तथा 76^0 33′ पूर्वी देशान्तर से 78^0 17′ पूर्वी देशान्तर के मध्य 5066 वर्ग किमी. में फैला है जबकि 8380 वर्ग किमी. में विस्तृत अलवर जिले का विस्तार 27^0 4′ उत्तरी अक्षांश से 28^0 4′ उत्तरी अक्षांश एवं 76^0 7′ पूर्वी देशान्तर से 77^0 13′ पूर्वी देशान्तर के मध्य है। दोनों सीमावर्ती जिले हैं। अलवर की सीमा हरियाणा राज्य तथा राजस्थान के भरतपुर, दौसा, जयपुर जिलों से मिलती है जबकि भरतपुर की सीमा दो राज्यों हरियाणा, उत्तरप्रदेश एवं राजस्थान के चार जिलों करोली, धौलपुर, दौसा व अलवर से मिलती है। भरतपुर जिले में धरातलीय विविधता स्पष्ट दिखाई देती है भरतपुर, नदबई तहसीलें मैदानी हैं जबकि रूपबास एवं बयाना में पहाड़ी धरातल अधिक है। शेष भाग सामान्यतया समतल हैं। बयाना, भरतपुर, डीग की मिट्टी उपजाऊ है। अलवर का अधिकांश भाग समतल मैदानी हैं। इस जिले में अरावली श्रृंखला दक्षिण–पश्चिम से उत्तर–पूर्व में कर्णवत् फैली है।

अलवर भरतपुर दोनों में रूपारेल बरसाती नदी बहती है। इसके अलावा अलवर जिले में साबी प्रमुख बरसाती नदी है जबकि भरतपुर में गभीर एवं बाणगंगा अन्य बरसाती नदियाँ हैं।

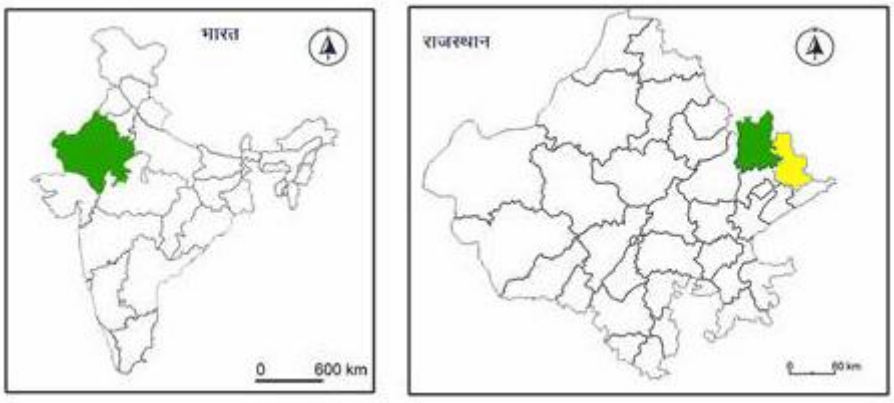

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दोनों जिलों में शीतकाल में कड़ाके की ठण्ड पड़ती है। सर्द रातों में कभी–कभी तापमान 2^0C से कम हो जाता है तथा ग्रीष्मकाल के भीषण गर्मी वाले दिनों में पारा 48^0C से भी कभी–कभी ऊपर चढ़ जाता है। वर्षा का औसत अलवर में 65.73 सेमी. जबकि भरतपुर में 66.39 सेमी. है।

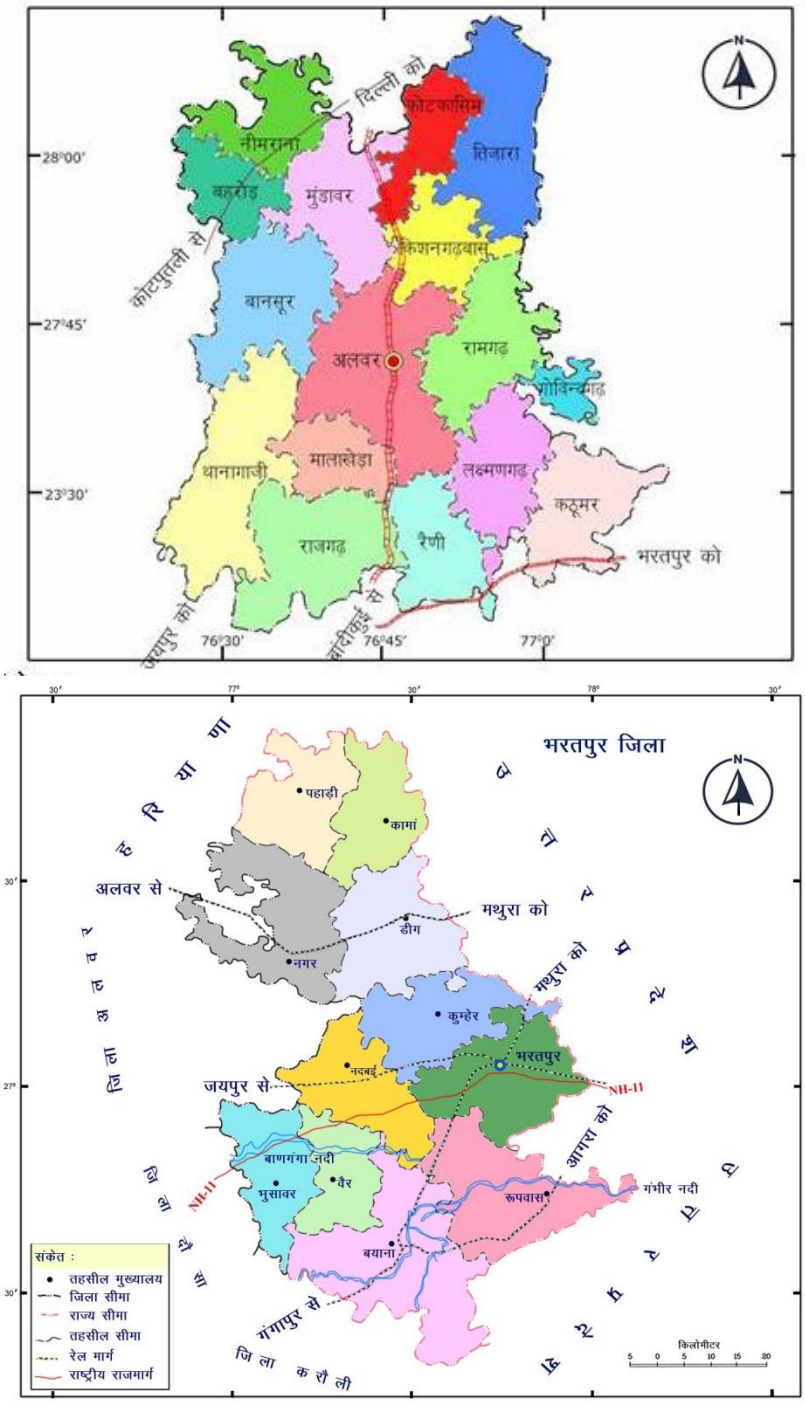

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

परिकल्पना

1. अलवर जिले में भरतपुर जिले की तुलना में लिंगानुपात की स्थिति बेहतर है।
2. अलवर एवं भरतपुर दोनों जिलों में निरपेक्ष रूप से लिंगानुपात की स्थिति खराब है।

अध्ययन का उद्देश्य

शोध अध्ययन निम्न उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया गया है–

1. अलवर एवं भरतपुर जिलों में 1901–2011 के मध्य की लिंगानुपात की स्थिति को जानना।
2. राजस्थान राज्य के सापेक्ष दोनों जिलों में लिंगानुपात की स्थिति को समझना।
3. कम लिंगानुपात के कारणों का पता लगाना।

शोध पद्धति

वर्ष 1901 से 2011 के मध्य के भारतीय जनगणना विभाग द्वारा प्रकाशित जनसंख्या आँकड़ों से लिंगानुपात सम्बन्धी आँकड़ों को एकत्र कर उनका तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। समस्या के कारणों व निराकरण के बारे में क्षेत्र के लोगों से साक्षात्कार के माध्यम से जानकारी प्राप्त की गई है।

साहित्य पुनरावलोकन

जनसंख्या के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन देश व विदेश के योजनाकार, समाजशास्त्री, जनसंख्याविद्, जनसंख्या भूगोलवेत्ता करते रहे हैं। लिंगानुपात जनसंख्या संघटन का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। इस विषय पर भी अनेक भारतीय एवं विदेशी विश्व विद्यालयों में शोध कार्य हुए हैं। जनसंख्या के अनेक पहलुओं पर किये शोध कार्यों में प्रवास, लिंगानुपात, साक्षरता, जनसंख्या वृद्धि, 0–6 आयु वर्ग में लिंगानुपात आदि महत्त्वपूर्ण बिन्दु हैं।

ट्रिवार्था ने 1953 में ने अपना लेख 'दी केस फार पापुलेशन ज्योग्राफी' अमेरिकी जर्नल में प्रकाशित करवाया। इसमें जनसंख्या भूगोल को स्वतन्त्र शाखा बनाने पर जोर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दिया। एस.पी. चटर्जी ने भारत में (1962) जनसंख्या वितरण एवं घनत्व पर गहन शोध परक कार्य किया। पीटरसन (1958) ने प्रवास की सामान्य प्रकारिको पर अध्ययन किया। दिनेश शर्मा ने 2008 में राजस्थान में लिंगानुपात की दशा व दिशा नामक लेख लिखा। बी. एन. सिन्हा ने (1958) उड़ीसा राज्य की जनसंख्या वितरण पर शोध कार्य किया। 1961 में गोसल ने आन्तरिक प्रवास पर शोध परक लेख लिखा । 1979 में प्रोफेसर गोसल के सम्पादकत्व में जनसंख्या भूगोल का भारत में प्रकाशन हुआ जिसमें 11 लेख लिंगानुपात, आयु–संरचना एवं वैवाहिक स्थिति पर थे तथा 17 लेख जातीय संघटन पर थे।

राजस्थान राज्य; जिला अलवर एवं भरतपुर के लिंगानुपात का अध्ययन करने के लिए भारतीय जनगणना विभाग द्वारा विभिन्न दशकों में कीगई जनगणना के प्रकाशित आँकड़ों में से 1901 से 2011 के आकड़ें एकत्र किये गये हैं जिनका विवरण तालिका–1 में दिया गया है–

तालिका– 1

लिंगानुपातः राजस्थान राज्य, जिला अलवर एवं भरतपुर (1901–2011)

जनगणना वर्ष	राजस्थान राज्य	अलवर जिला	भरतपुर जिला	अलवर–भरतपुर जिलों में लिंगानुपात का अन्तर
1901	905	922	859	63
1911	908	914	841	73
1921	896	884	820	64
1931	907	892	837	55
1941	906	890	840	50
1951	921	896	846	50
1961	908	892	859	33
1971	911	887	855	32
1981	919	892	848	44
1991	910	880	832	48
2001	921	886	854	32
2011	928	895	880	15

स्रोतः भारतीय जनगणना, 2901–2011

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तालिका–1 का अवलोकन से निम्न बिन्दु प्रकाश में आते हैं–

1. भरतपुर जिल का लिंगानुपात 1901 से 2011 तक लगातार राजस्थान राज्य के औसत लिंगानुपात एवं अलवर जिले के लिंगानुपात से कम रहा है।
2. अलवर जिले का लिंगानुपात, राजस्थान राज्य के औसत लिंगानुपात से 1901–2011 की अवधि में लगातार कम रहा है केवल जनगणना वर्ष 1911 इसका अपवाद है जिसमें अलवर का लिंगानुपात 914 था जो राजस्थान के लिंगानुपात से मात्र 6 अंक ऊपर था।
3. अलवर एवं भरतपुर जिलों के लिंगानुपात में भी राजस्थान राज्य के लिंगानुपात की तरह उतार–चढ़ाव आते रहे हैं।
4. अलवर में 1901 में 922 लिंगानुपात था जिसके मुकाबले 2011 तक लगातार लिंगानुपात कम दर्ज किया गया है। जबकि भरतपुर में 1901 में 859 लिंगानुपात था 2011 में इसमें 21 अंकों का सुधार होकर लिंगानुपात 880 हो गया।
5. आजादी के बाद 1951 से 2011 के मध्य अलवर जिले का लिंगानुपात 896 से 880 के मध्य उतार–चढ़ाव लेता रहा है। 1951 के बाद कभी भी 896 के अंक तक नहीं पहुँच पाया।
6. यदि 2011 को छोड़ दे तो 1951 से 2001 के मध्य भरतपुर में लिंगानुपात 846 से 859 के बीच उतरता–चढ़ता रहा ह।

किसी भी क्षेत्र में महिला–पुरुष का संतुलन बनाए रखने के लिए वहाँ का लिंगानुपात 1000 से 10–15 अंकों तक ही कम–ज्यादा होना चाहिए। इससे कम लिंगानुपात से समाज में पुरुष–महिला के मध्य असंतुलन पैदा कर देता है। इससे अनेक सामाजिक, मनोवैज्ञानिक समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

क्षेत्र के लोगों से दोनों जिलों में गत 110 वर्षों में लगातार लिंगानुपात की खराब स्थिति पर चर्चा करने पर निम्न तथ्य सामने आए। 50 लोगों से लिये साक्षात्कार में 20 नगरीय क्षेत्र से एवं 30 दोनों जिलों के ग्रामीण क्षेत्रों से थे। लिंगानुपात कम होने क पीछे निम्न कारण सामने आए–

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

1. बालक–बालिका भेद की पुरानी बुराई आज भी क्षेत्र में विद्यमान है।

2. 38 प्रतिशत लोगों ने महिलाओं को घटते लिंगानुपात के लिए दोषी ठहराया जबकि 32 प्रतिशत ने संयुक्त परिवार को दोषी माना।

3. 11 प्रतिशत लोग अशिक्षा को इसका जिम्मेदार मानते हैं जबकि 20 प्रतिशत लोग पढ़ाई को इसका जिम्मेदार मानते हैं।

4. अधिकांश लोगों ने दहेज प्रथा, हिन्दू समाज में कपाल क्रिया की सम्पन्नता के लिए पुत्र की अनिवार्यता को दोषी ठहराया।

5. कन्या भ्रूण हत्या, कन्या वध एवं प्रसूता स्त्रियों का प्रसव के समय मृत्यु, कम उम्र में लड़की का मातृत्व धारण करना, चिकित्सकों की लापरवाही, गर्भवती के प्रति परिवार की लापरवाही आदि अनेक कारण ऐसे सामने आए जिससे महिलाओं में मृत्युदर बढ़ती है या फिर कन्या भ्रूण हत्या से जन्म पूर्व ही कन्या को मार दिया जाता है।

नैतिक शिक्षा पर जोर, दहेज प्रथा पर रोक, स्त्री शिक्षा को बढ़ावा, स्त्री को रोजगार की स्वतन्त्रता एवं उनके लिए रोजगारों का सृजन आदि सुझाव आए जिनसे इस समस्या को व्यावहारिक हल निकाला जा सकता है।

निष्कर्ष

1901 से 2011 के अलवर एवं भरतपुर जिलों के लिंगानुपात के आँकड़ों का विश्लेषण से दोनों शोध परिकल्पनाएँ सत्य प्रमाणित होती है। भरतपुर जिले में अध्ययन अवधि में अलवर जिले से लगातार लिंगानुपात कम रहा है निरपेक्ष रूप से भी देखे तो अलवर जिले में 1901–2011 में कभी भी 922 से ऊपर तथा भरतपुर में किसी भी वर्ष में 880 से ऊपर लिंगानुपात नहीं बढ़ा। किसी क्षेत्र में जहाँ कुल जनसंख्या लाखों में हो वहाँ प्रति 1000 पुरुषों पर 78 से 122 स्त्रियों का कम होना एक गंभीर समस्या का संकेत करता है। समाज व राज्य का दायित्व है कि इसे गंभीरता से लेकर उसके व्यावहारिक समाधान की दिशा में अधिक प्रयास करे।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संदर्भ :

1. डॉ. बी.पी.पंडा (2007) : जनंसख्या भूगोल हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल
2. अग्रवाल, एस.एन. (1962) : एज एट मैरिज इन इण्डिया, किताब पहल प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद।
3. पाण्डे, राजबली (1949), हिन्दू संस्कार : ए सोशियो–रिलीजियस स्टडी ऑफ दा हिन्दू सक्रामेण्ट्स, विक्रमा पब्लिकेशन्स बनारस
4. शर्मा, रोहित (2015) : राजस्थान में जनसंख्या संघटन, कॉलेज बुक हाउस, जयपुर
5. साईवाल, स्नेह, (2012), राजस्थान का भूगोल, कॉलेज बुक हाउस, जयपुर
6. बंसल, सुरेश चन्द (2012), भारत का भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन, मरेठ
7. आहूजा, राम (2007) : भारतीय समाज व्यवस्था, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर
8. भारतीय जनगणना 1901 से 2011–की अलवर एवं भरतपुर जिलों की जनगणना पुस्तिका